इकाई 15 आँखों देखा हाल (कमेंट्री)

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य
15.1 प्रस्तावना
15.2 आंखों देखा हाल का तात्पर्य
  15.2.1 कमेंट्री के प्रकार
  15.2.2 कमेंट्री की उपयोगिता
15.3 कमेंटेटर की विशेषताएं
  15.3.1 आवाज
  15.3.2 उच्चारण एवं प्रवाह
  15.3.3 सम्यक ज्ञान
  15.3.4 सरल भाषा
  15.3.5 आत्मविश्वास
15.4 पूर्व तैयारी
15.5 कुछ आवश्यक बातें
  15.5.1 ध्वनि-उपयोग
  15.5.2 मौन
  15.5.3 खाली समय का उपयोग
15.6 कमेंट्री के प्रकार
  15.6.1 खेल कमेंट्री
  15.6.2 खेलेतर कमेंट्री
15.7 सारांश
15.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपको रेडियो पर प्रसारित होने वाले 'आंखों देखा हाल' या 'कमेंट्री' की जानकारी दी जाएगी। इसे पढ़ने के बाद आप आंखों देखा हाल के आधारभूत सिद्धांतों को समझ सकेंगे; कमेंट्री या आंखों देखा हाल की प्रस्तुति के पहले प्राप्त की जाने वाली जानकारियों का वर्णन कर सकेंगे; आंखों देखा हाल की विशेषताओं को रेखांकित कर सकेंगे; एक अच्छे कमेंटेटर के गुणों को समझा सकेंगे; कमेंटेटर द्वारा अपनायी जाने वाली अपेक्षित सावधानियों का जिक्र कर सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

यह तीसरे खंड की अंतिम और इस पाठ्यक्रम की तेरहवीं इकाई है। इस इकाई में हम कमेंट्री या आंखों देखा हाल का परिचय प्राप्त करने जा रहे हैं। यह पाठ्यक्रम व्यवहारमूलक है और इसमें हमने अपको विभिन्न प्रकार के रेडियो कार्यक्रमों के आलेख की तैयारी से संबंधित जानकारियां दी हैं। पर इस इकाई में हम आपको आलेख की तैयारी करना नहीं सिखा रहे हैं, बल्कि प्रस्तुतिकरण के आधारभूत सिद्धांतों की जानकारी दे रहे हैं; इसका कारण स्पष्ट है। कमेंट्री या आंखों देखा हाल में कोई पूर्व-निर्मित आलेख कमेंटेटर के सामने नहीं होता है। वह लगातार घट रही घटनाओं का ब्यौरा श्रोताओं को देता चलता है। यह ब्यौरा जितना प्रामाणिक, स्वाभाविक और आकर्षक होगा, कमेंट्री उतनी ही सशक्त और प्रभावोत्पादक होगी।

हम इस इकाई में दो प्रकार की कमेंट्री की चर्चा करने जा रहे हैं - खेल कमेंट्री और खेलेतर कमेंट्री।

हम यहां पर उन बुनियादी सिद्धांतों की चर्चा कर रहे हैं, जो रेडियो कमेंट्री के लिए आवश्यक है। आपको सलाह दी जाती है कि आप ज्यादा से ज्यादा रेडियो कमेंट्री सुनें और सीखें। आप हमारे बताए रास्ते पर चलकर और अपने अनुभव और परिश्रम का उपयोग कर अच्छे रेडियो कमेंटेटर बन सकते हैं ।

15.2 आंखों देखा हाल का तात्पर्य

ऑखों देखा हाल या कमेंट्री वर्तमान का विवरणात्मक प्रस्तुतिकरण है। इसमें प्रसारक या कमेंटेटर जैसे-जैसे देखता है, वैसे-वैसे उसे माइक्रोफ़ोन पर अपने असंख्य श्रोताओं को सुनाता चलता है। वस्तुतः कमेंट्री या आंखों देखा हाल उस वर्णन को कहते हैं जो घटना का शब्द-चित्र दूर बैठे श्रोताओं को प्राप्त होता है। प्रसारणकर्ता द्वारा घटनास्थल से दूर बैठे श्रोताओं तक घटना 'शब्द-चित्र' प्रेषित करना 'आंखों देखा हाल' या रनिंग कमेंट्री कहा जाता है। प्रसारक या कमेंटेटर जो-जैसे देखता है उसका सटीक विवरण माइक्रोफ़ोन पर करता है और श्रोता अपने रेडियो सेट पर उसे सुनकर उस स्थान और वहां चल रही गतिविधि की जानकारी प्राप्त करता है।

15.2.1 कमेंट्री के प्रकार

मुख्यतः कमेंट्री को दो भागों में बांटा जा सकता है -

(क) खेल सम्बन्धी कमेंट्री
(ख) खेलेतर (खेल के अतिरिक्त) कमेंट्री

आप जब हॉकी मैच, क्रिकेट मैच, फुटबाल, टेनिस, वॉलीबाल या किसी भी खेल-मैच का विवरण रेडियो के माध्यम से सुनते हैं तो इसे खेल संबंधी आंखों देखा हाल की श्रेणी में रखा जाता है।

जब आप किसी घटना, दुर्घटना समारोह, मेला, शोभा-यात्रा आदि का विवरण सुनते हैं तो ये खेलेतर (खेल के आलवा) कमेंट्री की संज्ञा प्राप्त करते हैं। इनमें 15 अगस्त, 26 जनवरी, पुरी से रथ यात्रा, मथुरा से कृष्ण जन्माष्टमी आदि तथा किसी विशिष्ट व्यक्ति की अंतिम यात्रा, किसी महान व्यक्ति का आगमन अथवा सांस्कृतिक महत्व की घटना (जैसे अमृतसर से 400 वें प्रकाशोत्सव का अवसर) का विवरण आदि शामिल किए जा सकते हैं।

यह तथ्य आपको समझ लेना चाहिए कि यद्यपि आंखों देखा हाल (रनिंग कमेंट्री) की प्रक्रिया दोनों प्रकारों में एक जैसी है तो भी खेल कमेंट्री और खेलेतर कमेंट्री कला में काफी भिन्नता है। खेल कमेंट्री में खेल की बारीकियों का ज्ञान आवश्यक है और खेलेतर कमेंट्री में प्रसारक के पास प्रचुर मात्रा में ज्ञान भण्डार की आवश्यकता रहती है।

15.2.2 कमेंट्री की उपयोगिता

आंखों देखा हाल किसी स्थान पर घट रही घटना का विवरण एक साथ अनेक स्थानों पर श्रोताओं तक पहुँचाता है। सबके पास इतने साधन अथवा समय नहीं होता कि घटना स्थल पर पहुंचा जा सके। इलेक्ट्रॉनिक युग में यह संभव हो सका है कि रेडियो के

माध्यम से श्रोता स्वयं को घटनास्थल के साथ जोड़ सके। समाचार पत्र में अगले दिन सचित्र विवरण छपता है परन्तु पाठक का घटना से सीधा तालमेल नहीं बैठता और वैसे भी समाचार पत्र बीते कल की कहानी बताएगा। रेडियो (टेलीविजन माध्यम से भी) के आगमन के बाद प्रसारक-श्रोता से तत्क्षण जानकारी प्राप्त करने की क्षमता रखता है। पुरी से रथयात्रा का विवरण जब दिल्ली में घर में बैठा व्यक्ति सुनता है तो उसे लगाता है मानो भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के रथ उसकी आंखों के सामने से जा रहे हों - साथ ही पुरी (उड़ीसा) का मौसम, वहां की भीड़ और उल्लास का अनुभव भी श्रोता को कमेंट्री द्वारा प्राप्त होता है। कमेंट्री किसी घटना, उत्सव और खेल को लोकप्रिय भी बनाता है। यह उसे ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाने का माध्यम है। आप सभी जानते हैं कि क्रिकेट को भारत में लोकप्रिय खेल बनाने का श्रेय रेडियो कमेंट्री को जाता है। खेल की बारिकियों से अपरिचित साधारण व्यक्ति भी चौके, छक्के और आउट होने पर यथेष्ट प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। 15 अगस्त और 26 जनवरी को सुनाए जाने वाले आंखों देखा हाल से पूरा राष्ट्र एक सूत्र में बंधता है। कमेंट्री द्वारा खिलाड़ियों को भी लोकप्रिय बनने का अवसर मिलता है।

बोध प्रश्न

1. 'आंखों देखा हाल' से आप क्या जानते हैं? (सही उत्तर के सामने (✓) का चिह्न लगाइए)।
   क) आंखों देखा हाल समाचार प्रसारण का एक प्रकार है। ( )
   ख) आंखों देखा हाल घट रही घटनाओं का ब्यौरा मात्र है । ( )
   ग) आंखों देखा हाल में कहीं घट रही घटनाओं की सिलेसिलेवार जानकारी दी जाती है। ( )
   घ) रेडियो पर आंखों देखा हाल में श्रोता अपनी आंखों से घटना को घटते देखता है। ( )

2. आंखों देखा हाल कार्यक्रम के दो प्रकारों का उल्लेख कीजिए।
   क) .....
   ख) .....

3. रेडियो से प्रसारित होने वाले 'आंखों देखा हाल' कार्यक्रम की क्या उपयोगिता है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)
   .....
   .....
   .....
   .....
   .....

15.3 कमेंटेटर की विशेषताएं

कमेंट्री कितनी रोचक एवं जीवंत है यह कमेंटेटर पर निर्भर है। कमेंटेटर की गुणवत्ता के बारे में कहा जाता है कि अच्छा कमेंटेटर वह है जो केसर की बगिया से आंखों देखा हाल सुनाए तो श्रोताओं को केसर की महक आए। कमेंटेटर आवाज, भाषा, शब्दों के प्रयोग द्वारा श्रोताओं को जब घटना की जानकारी देता है तो श्रोता को बहुत सी ऐसी बातें पता चलती हैं जो संभवतः घटनास्थल पर उपस्थित दर्शक को भी नहीं होती। कमेंटेटर में कुछ गुण होने आवश्यक है तभी तो उसके द्वारा सुनाया गया आंखों देखा हाल सही अर्थों में शब्द चित्र बन पाएगा।

15.3.1 आवाज

आवाज प्रथम आकर्षण है। आप जब किसी से बात करते हैं तो अनजाने दूसरे व्यक्ति की आवाज की मृदुलता, मधुरता एवं लयात्मकता आपको प्रभावित कर जाती है। अधिक तीव्र एवं कनफाडू आवाज कोई भी नहीं सुनना चाहता। आवाज का अपना जादू है तभी तो एक अच्छे कमेंटेटर या प्रसारक को आवाज का जादूगर कहा जाता है। आवाज की गंभीरता, आवाज का उल्लास, आवाज की ताजगी जब जब आवश्यक हो तदनुरूप उसका उपयोग कमेंटेटर को अच्छा प्रसारक बनाती है।

15.3.2 उच्चारण एवं प्रवाह

कमेंटेटर का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए ताकि उसका विवरण गतिरोध न पैदा करे। यदि अपनी मूल भाषा में दूसरी भाषा के शब्द का उपयोग किया जाए तो उसका उच्चारण भी शुद्ध होना चाहिए। शुद्ध उच्चारण भाषा का श्रृंगार करता है। कमेंटेटर का प्रवाह भी जल की लहर की भांति होना चाहिए। अधिक उत्तेजित क्षणों में गति की चरम सीमा हो तो भी प्रवाह ऐसा हो कि एक-एक शब्द स्पष्ट सुनाई दे। यदि गति अति धीमी भी करनी पड़े तो भी प्रवाह में संगीतात्मकता हो।

15.3.3 सम्यक ज्ञान

किसी भी प्रसारक को अनेक विषयों का ज्ञान होना वांछनीय है परन्तु कमेंटेटर के लिए यह तत्व आवश्यक है। किसी घटना, समारोह अथवा खेल का आंखों देखा हाल सुनाते समय कमेंटेटर के ज्ञान की निरन्तर परीक्षा होती रहती है। जो साधारण व्यक्ति को दिखाई देता है कमेंटेटर को उससे अधिक गहराई से देखना पड़ता है और विवरण सुनाने के लिए कई तरह की जानकारियां उसके पास होनी चाहिए। खेल के अलावा उसके इतिहास, खिलाड़ियों की पृष्ठभूमि और खेल से जुड़े कुछ रोचक प्रसंग कमेंटेटर की बात एक सामान्य जानकारी है परन्तु उत्सव कब, क्यूं, कैसे आयोजित होते हैं, सामाजिक व धार्मिक मान्यताएं क्या है, कौन-कौन से अवसरों पर ऐसे और उत्सव होते हैं - इन सभी बातों का कमेंटेटर को पर्याप्त ज्ञान होना जरूरी है।

इन सब जानकारियों के साथ ही प्रसारक को आंखों देखा हाल सुनाना चाहिए अन्यथा नई सूचना के अभाव में श्रोता की रूचि समाप्त हो जाती है।

15.3.4 सरल भाषा

दो व्यक्तियों के बीच बातचीत का माध्यम भाषा होती है। दूसरे अर्थों में यह माना जाता है कि दो पक्षों को जोड़ने वाली भाषा, एक पुल के समान है। रेडियो प्रसारण के संबंध में भाषा की भूमिका सबसे प्रमुख रहती है। प्रसारण के एक सिरे पर बोलने वाला और दूसरे अदृश्य सिरे पर सुनने वाला-बीच में भाषा को जोड़ने वाली तरंगें। दोनों पक्ष अगर इन भाषा तरंगों से जुड़ गये, रेड़ियो का वही कार्यक्रम सफल - उसने अपना लक्ष्य भेद कर दिया। रेडियो है ही ध्वनि का माध्यम। कमेंट्री की भाषा कैसी होनी चाहिए? यहां जब बात हम हिन्दी कमेंट्री की कर रहे हैं तो प्रश्न उठता है कि कमेंट्री में प्रयुक्त हिन्दी कैसी होनी चाहिए। कमेंटेटर हिन्दी के कौन से स्वरूप को अख्तियार करे? भारी-भरकम तत्सम शब्दावली वाली संस्कृतनिष्ठ हिन्दी या आम बोलचाल में काम आने वाली हिन्दी? यहां फिर हम अपनी बात दोहराएँगे कि - 'अपने श्रोता को पहचानिए'। जी हाँ, आप किसे लक्ष्य बनाकर कमेंट्री कर रहे हैं? कमेंटेटर को बोलते समय हर पल यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। कमेंटेटर हर वर्ग के लिए अलग-अलग हिन्दी बोलने से रहा। यह व्यावहारिक नहीं होगा। इसलिए उसे ऐसी हिन्दी का उपयोग करना होगा जो बिना परेशानी, सहज भाव से सारे श्रोताओं को स्वागत योग्य लगे। उसकी कमेंट्री की भाषा इन सब वर्गों के लिए सुपाच्य होनी चाहिए।

उदाहरण

1. यूनिवर्सिटी छोर से विलिस तेजी के साथ आगे बढ़े। उन्होंने गेंद की, आफ स्टम्प के बाहर। कपिल एक इंच भी अपनी जगह से हिले नहीं और बल्ला आगे बढ़ा दिया। तकदीर ने उनका साथ दिया, जो गेंद बल्ले से नहीं लगी वरना तीनों स्लिप्स तैयार थे, पीछे कैच लेने के लिए।

2. इमरान ने यों अपना आठवां विकेट लिया और नाटकीय तरीके से भारत की पारी को समाप्त कर दिया।

3. एकदम यकीन नहीं आता, गोया गावस्कर जैसे एक मजबूत इरादे वाले बल्लेबाज ऐसी मामूली गलती कैसे कर बैठे ?

4. कपिल के ऊपर जिम्मदारी जाती है कि वे आस्ट्रेलिया के मंसूबों को जमने से पहले ही उखाड़ दें। वे मैदान में क्या करते हैं, इसी से फैसला होगा।

5. इमरान ने जैसी फील्डिंग लगाई है उसके आगे श्रीकांत जैसे आक्रामक बल्लेबाज के लिए मनचाहे ढंग से रन निकालना नामुमकिन लग रहा है।

यहाँ भारी भरकम हिन्दी की बजाय, समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग किया गया है। आखिर हम कमेंट्री पंडितों के लिए तो प्रसारित नहीं कर रहे। उसे बड़े चाव के साथ पान वाले, रेहड़ी वाले और मजदूर भी तो सुन रहे हैं। कमेंटेटर ने अगर अंग्रजी शब्दों के पर्याय जबरदस्ती ठूंसने की कोशिश की तो वह कमेंट्री न रहकर किसी प्रोफेसर का क्लास रूम लेक्चर या किसी संत का प्रवचन बन जाएगा। सही भाषा के साथ-साथ सही उच्चारण का भी उतना ही महत्व है।

15.3.5 आत्मविश्वास

कमेंटेटर को कमेंट्री से पहले इतनी तैयारी कर लेनी होती है कि उसे जानकारी की कमी महसूस न हो- इसे होम वर्क कहते हैं। कमेंटेटर के पास ठोस एवं प्रामाणिक जानकारी होने से उसमें आत्मविश्वास बढ़ता है और जब तक कमेंटेटर पूरे विश्वास के साथ माइक्रोफोन के सामने नहीं आता तब तक उसके विवरण में जान नहीं आ सकती। सजीव प्रसारण की आवश्यकता है कि कमेंटेटर योद्धा की तरह श्रोताओं के सामने आए और योद्धा भी ऐसा जिस की जीत निश्चित है।

जिस प्रकार किसी अन्य कला में सफलता प्राप्त करने के लिए निष्ठा एवं लगन की जरूरत होती है उसी प्रकार आंखों देखा हाल की प्रस्तुति में भी अनुभव और मेहनत का समान महत्व होता है। पूरी तैयारी ही ऐसा मंत्र है जिससे आत्मविश्वास बढ़ता है।

बोध प्रश्न

4. एक अच्छे कमेंटेटर के किन्हीं तीन गुणों का उल्लेख कीजिए।
   क .....
   ख) .....
   ग) .....

5. क्या किसी समारोह या खेल की कमेंट्री करने के लिए समारोह या खेल की जानकारी आवश्यक है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)
   .....
   .....
   .....

.....

.....

6. कमेंट्री की भाषा कैसी होनी चाहिए? (पाँच पंक्तियों के उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

.....

.....

15.4 पूर्व तैयारी

रेडियो पर कमेंट्री करने से पूर्व कमेंटेटर को पूरी तैयारी करनी पड़ती है। सबसे पहले उसे कमेंट्री करने के लिए मानसिक रूप से तैयार होना पड़ता है। इसके अतिरिक्त उसे घटना विशेष और स्थल विशेष से संबद्ध अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठी करनी होती है। जिस स्थान से आंखों देखा हाल सुनाया जा रहा है, उसकी जितनी भी जानकारी हो सके उपलब्ध कर लेनी चाहिए। जरूरत के मुताबिक उसका उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए उस स्थान की सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आदि के बारे में कमेंटेटर को जानकारी होनी चाहिए।

कमेंटेटर को जिस समारोह या खेल की कमेंट्री करनी हो, उसके संबंध में पूरी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। जो भी जानकारी मिल सके उसे प्राप्त किया जाना चाहिए और आवश्यकतानुसार छोटे-छोटे नोट्स तैयार कर लिए जाने चाहिए। इन्हें उपयुक्त समय पर श्रोताओं को सुनाया जा सकता है।

यदि समारोह का पूर्वाभ्यास किया जा रहा हो तो कमेंटेटर को पूर्वाभ्यास स्थल पर अवश्य उपस्थित रहना चाहिए। गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, सैनिक परेड आदि के पूर्वाभ्यास किए जाते हैं। उस समय कमेंटेटर काफी सामग्री एकत्रित कर सकता है, जिसका आंखों देखा हाल सुनाते समय उपयोग किया जा सकता है।

15.5 कुछ आवश्यक बातें

आखों देखा हाल सुनाते समय कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना पड़ता है ताकि विवरण रूचिकर बन सके।

15.5.1 ध्वनि उपयोग

जैसाकि आपको बता चुके हैं कमेन्ट्री को शब्दचित्र कहा जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो घटनास्थल का वातावरण दूर बैठे श्रोता तक हू-ब-हू पहुंचाना ही कमेटेटर की सफलता की निशानी है। खेल के मैदान में उपलब्ध ध्वनियों का नपा तुला उपयोग श्रोता की रूचि बनाए रखने में विशेष भूमिका निभाते हैं। जब गोल के समीप फुटबाल अथवा हाकी गेंद पहुंच गई तो मैदान में होने वाला शोर श्रोता को शब्दों से अधिक प्रभावित करता है। उसे लगता है कि वह स्वयं मैदान में उपस्थित है। किसी उत्सव में प्रस्तुत संगीत एवं दर्शकों की विभिन्न आवाजें भी श्रोता को घटना के साथ जोड़ती है। प्रसारक के शब्द एवं घटनास्थल पर उत्पन्न ध्वनियां मिलकर प्रसारण की रोचकता बढ़ाते हैं। परन्तु ध्वनि कब और किस मात्रा में श्रोता तक पहुंचे इसका ध्यान रखना बहुत आवश्यक है।

15.5.2 मौन

कमेंट्री में मौन का भी अपना महत्व है। दर्शक समय-समय पर हर्ष और उल्लास प्रकट करते हैं, गोल होने या विकेट गिरने पर उनकी प्रतिक्रिया होती है। इससे उत्पन्न ध्वनियां कमेंट्री को तभी सजीव बनाएंगी जबकि कमेंट्री करने वाला उन क्षणों में बोलना स्थगित कर देंगे और खामोश रहेंगे। इससे लगातार कमेंटेटर की आवाज सुनते-सुनते ऊब रहे श्रोता की एकरसता भी भंग होती है और कमेंटेटर को भी कुछ क्षणों का विश्राम मिल जाता है। उपलब्ध ध्वनियों के उपयोग के अलावा कई बार एक-दो क्षण की खामोशी भी कमेंट्री को सुन्दरता प्रदान करती है। उदाहरण के लिए भारत के अंग्रेजी कमेंटेटर स्वर्गीय मैलबिन डिमैलो द्वारा देश के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवारहलाल नेहरू द्वारा नांगल बांध का उद्घाटन करते समय दी गयी कमेंट्री के ये अंश इस बात का प्रमाण हैं -

'प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू अब उस स्थान की ओर बढ़ रहे हैं जहां एक बिजली का बटन है, और जिसे दबाते ही नांगल बांध का उद्घाटन हो जाएगा। इसके बाद 5-6 सेकेंड बाद डि-मैलो की आवाज सुनाई पड़ती है -

'एंड दस नांगल पासेज इनटू हिस्ट्री'
'(और इस प्रकार नांगल इतिहास का हिस्सा बन गया)

प्रसिद्ध कमेंटेटर, (हिन्दी) जसदेव सिंह भी इस कला का सुन्दर उपयोग करते हैं। उनकी कमेंट्री खेल में रंग भर देती है।

15.5.3 खाली समय का उपयोग

कई बार कमेंट्री में ऐसी स्थिति बन जाती है जब घटना स्थल पर अवरोध उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे - हो सकता है मुख्य अतिथि के आगमन में देर हो जाए या खेल के दौरान कुछ देर के लिए खेल रोकना पड़े। इन अवसरों पर कमेंटेटर के पास पर्याप्त सामग्री होनी चाहिए और उसे अपनी सूझ-बूझ, कुशलता, कल्पना शक्ति और सामान्य जानकारी का परिचय देना होता है। उदाहरण स्वरूप लाहौर बस यात्रा के समय बाघा (अमृतसर) सीमा से कमेंट्री की जा रही है। सभी बस के पहुंचने की प्रतीक्षा कर रहे हैं - श्रोता की रूचि बनी रहे इसलिए कमेंटेटर सीमा पार का दृश्य तथा रेडक्लिफ लाईन (भारत पाक सीमा रेखा) के बारे में विस्तृत जानकारी दे सकता है।

अन्तराल की पूर्ति सर्जनात्मक एवं कलात्मक ढंग से की जानी चाहिए।

15.6 कमेंट्री के प्रकार

समारोहों, घटनाओं तथा पर्वों आदि के समय सुनाया जाने वाला आंखों देखा हाल खेल के मैदान से की जा रही कमेंट्री से काफी अलग होता है। कमेंट्री को खेल कमेंट्री और खेलेतर कमेंट्री - इन दो वर्गो में मुख्यतः विभाजित किया जा सकता है। इन दोनों के अन्तर्गत कमेंट्री की शैली में काफी भिन्नता देखने को मिलती है ।

15.6.1 खेल कमेंट्री

खेल कमेंट्री में विभिन्न खेलों, जैसे - क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, बास्केटबॉल, हैण्डबॉल, नैटबॉल, टेनिस (लॉन टेनिस), फ्री स्टाइल कुश्ती, स्वीमिंग, एथलेटिक आदि पर कमेंट्री की जाती है। प्रत्येक खेल के विषयों को ध्यान में रखते हुए व खेल की तकनीक का

जानकार कमेंटेटर ही उस खेल पर कमेंट्री कर सकता है। इसलिए उसे उस खेल के बारे में जानना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर यदि क्रिकेट की कमेंट्री करनी हो तो यह आवश्यक है कि स्वयं कमेंटेटर को क्रिकेट की अच्छी जानकारी हो। यह जरूरी नहीं है कि वह क्रिकेट का खिलाड़ी हो। उसके लिए क्रिकेट के नियमों को जानना और खेल को समझना ज्यादा जरूरी है। उसे खेल की तकनीकी शब्दावली का ज्ञान अवश्य होना चाहिए।

खेल कमेंट्री में कमेंटेटर को बड़ी सूझ-बूझ के साथ श्रोताओं को सही व निष्पक्ष जानकारी देनी होती है। इसमें कमेंटेटेर की भाषा अत्यंत सरल व साफ होनी चाहिए ताकि एक आम आदमी भी आसानी से उसे समझ सके। इस प्रकार की कमेंट्री में कमेंटेटर को निम्न विशेषताओं का पालन अवश्य करना चाहिए -

1) निष्पक्ष भूमिका
2) सुखद आवाज
3) सरल भाषा
4) खेल का ज्ञान
5) एकाग्रता
6) सहज अभिव्यक्ति
7) विविधता

एक कमेंटेटर को हमेशा निष्पक्ष होना चाहिए। जो कुछ हो रहा है उसे वही सुनाना चाहिए। जो होना चाहिए या जो हो सकता था, कमेंट्री की परिधि में नहीं आता है। इसके लिए अलग से आवश्यकता हो तो एक जाने माने खिलाड़ी को विशेषज्ञ के रूप में साथ रखा जा सकता है। खेल कमेंटेटर को एक फिल्मी कैमरे की तरह होना चाहिए जो यह बताता रहे कि कहां कौन खिलाड़ी खेल रहा है, बॉल किस खिलाड़ी के पास है, किस खिलाड़ी ने किस खिलाड़ी को बॉल दी, किसने गोल किया, किसने विकेट ली, आदि-आदि।

खेल कमेंट्री की भाषा सरल और सहज होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए, इसमें खेल की तकनीकी शब्दावली का भी कमेंटेटर को इस्तेमाल करना पड़ता है। जैसे मिड विकेट, स्लिप, गली, गोल, हॉफ स्पिन, पेनाल्टी आदि। इन शब्दों के हिन्दीकरण करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

कमेंटेटर के लिए हिदायतें

1) कभी भी पक्षपात न करें और न ही ज्यादा भावुक व निर्णायक बनें। ऐसी शब्दावली जैसे 'हम जीत रहे हैं' अथवा 'हार रहे हैं' या 'हमारे खिलाड़ी' या व्यवहार न करें।

2) कभी भी पक्षपातपूर्ण ढंग से किसी खिलाड़ी की अत्यधिक प्रशंसा न करें और किसी की बुराई न करें।

3) कभी भी विशेषज्ञ (एक्सपर्ट) की भूमिका अदा करने की कोशिश न करें।

4) अम्पायर के निर्णय पर कभी भी अपनी टिप्पणी अथवा निर्णय न दें क्योंकि उसका निर्णय अंतिम माना जाता है।

5) कभी भी न कहें कि 'मैने नहीं देखा' अथवा 'जैसे मैंने देखा' क्योंकि आप वहां उपस्थित हैं।

6) कभी भी अपने साथी कमेंटेटर की गलतियों (यदि वह करता है) को अपनी कमेंट्री में शामिल न करें और न ही उसकी बुराई करें। बल्कि एक सादे कागज पर लिखकर उसकी भूल सुधार को उस तक पहुंचा सकते हैं ताकि वह स्वयं कमेंट्री में इसको दूर करे।

7) मैच समाप्ति के पश्चात कभी भी अधिक समय तक कमेंट्री न करते रहें, बल्कि संक्षेप में विवरण देकर इसका अन्त करें तथा स्कोर बोर्ड बताकर माइक विशेषज्ञ को सौंप दें।

8) कमेंट्री करते समय अनावश्यक रूप से न चीखें न चिल्लाएं। कमेंटेटर को अपनी आवाज संयत रखनी चाहिए, क्योंकि उसकी 'टोन' से भी निष्पक्षता का वातावरण भंग हो सकता है।

15.6.2 खेलेतर कमेंट्री

इसे हम बोलचाल की भाषा में नॉन स्पोर्ट्स कमेंट्री की संज्ञा देते हैं जिनमें मुख्य वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है -

1) राष्ट्रीय महत्व की घटनाएँ

यथा स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, शपथ समारोह (राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री)

2) शोक सम्बन्धी

किसी विशिष्ट व्यक्ति के देहावसान के बाद अन्तिम यात्रा का वर्णन करना भावुक एवं मार्मिक प्रसंग होता है। ऐसे अवसर पर की जाने वाली कमेंट्री चुनौतीपूर्ण एवं अलग शैली में होती है। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, मदर टेरेसा की अन्तिम यात्रा का विवरण जिन लोगों ने सुना था उसका स्मरण उन्हें आज भी याद होगा। भावुक बातों का विवरण मन को बहुत गहरे छूने वाला होता है।

3) पर्व एवं उत्सव

किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के आगमन पर या ऐतिहासिक महत्व की घटना के अवसर पर की जाने वाली कमेंट्री इस कड़ी में आती है। वर्ष 2004 में अमृतसर से 400 साला प्रकाशोत्सव के अवसर पर आंखों देखा हाल सुनाया गया जिसे लोगों ने देश-विदेश में श्रद्धा भाव के साथ सुना। संसद भवन से समय समय पर कई प्रकार की कमेंट्री की जाती है जिनमें बजट प्रस्तुति आदि शामिल है। वर्ष 1999 में दिल्ली-लाहौर प्रथम बस यात्रा के अवसर पर बाघा (अमृतसर) सीमा के दोनों ओर से आंखों देखा हाल सुनाया गया था। पाकिस्तान के राष्ट्रपति के आगरा आगमन पर भी कमेंट्री की गई।

यहाँ स्पष्ट करना उचित रहेगा कि राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित कमेंट्री के अतिरिक्त कई बार स्थनीय महत्व की घटना के बारे में किसी भी केन्द्र से अथवा कुछ केन्द्रों के समूह द्वारा भी आंखों देखा हाल सुनाया जा सकता है।

कमेंटेटर हेतु कुछ सामान्य बातें

1. कमेंट्री से पूर्व गृह कार्य पर बल दें।
2. तथ्यों में नामों के बारे में सही जानकारी प्राप्त करें।
3. समय के काफी पहले कमेंट्री स्थल पर पहुंचना अच्छा रहता है।
4. साथी कमेंटेटर एवं तकनीकी सहयोगियों से अच्छा तालमेल बनाए रखें।
5. कागज, पैन, पेंसिल तथा पानी की व्यवस्था निश्चित करें।
6. निर्णय लेने का काम प्रबन्धक पर छोड़ दें।

बोध प्रश्न

7. एक कमेंटेटर को कमेंट्री करने के पूर्व क्या-क्या तैयारी करनी पड़ती है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....
.....
.....
.....
.....

8. कमेंट्री को किस प्रकार प्रभावी बनाया जा सकता है?

क) .....
ख) .....
ग) .....

9. किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद आपको शोभा-यात्रा का वर्णन करना पड़े तो आप कौन-कौन सी बातें ध्यान में रखेंगे? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....
.....
.....
.....
.....

10. खेल कमेंट्री करते वक्त कमेंटेटर को किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? (किन्हीं पांच का उल्लेख कीजिए)

क) .....
.....
ख) .....
.....
ग) .....
.....
घ) .....
.....
ङ) .....
.....

15.7 सारांश

आपने इस इकाई में कमेंट्री संबंधी आधारभूत तथ्यों की जानकारी प्राप्त की। कमेंट्री द्वारा श्रोता के सम्मुख किसी घटना, समारोह या खेल का सही-सही ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है। कमेंटेटर को निष्पक्ष होना चाहिए और उसे आकर्षक ढंग से ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहिए। स्थिति के अनुरूप कमेंटेटर को अपनी आवाज, भाषा और 'टोन' को नियमित करना चाहिए। कमेंट्री करने के पूर्व कमेंटेटर को पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए। उसे संबद्ध घटना की पूरी-पूरी जानकारी होनी चाहिए। वह अपने साथ इन जानकारियों को लिखकर भी रख सकता है। कमेंट्री करने से पूर्व कमेंटेटर को आयोजकों और कार्यक्रम अधिकारी के साथ उचित तालमेल स्थापित कर लेना चाहिए।

15.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) (ग)

2) (क) सार्वजनिक उत्सव की कमेंट्री
(ख) खेल कमेंट्री

3) आंखों देखा हाल किसी समारोह को दूर-दराज बैठे लोगों तक ले जाता है। इससे समारोह या खेल तथा उसमें भाग ले रहे व्यक्तियों के बारे में भी श्रोताओं को जानकारी मिलती है (देखिए, भाग 15.2.2)

4) (क) अच्छी आवाज
(ख) सम्यक ज्ञान
(ग) बोलने में प्रवाह

5) हां, आवश्यक है। घटना या खेल विशेष की जानकारी के अभाव में कोई कमेंटेटर सही कमेंट्री कर ही नहीं सकता (देखिए भाग 15.3.2)

6) कमेंट्री की भाषा सरल और सम्प्रेष्य होनी चाहिए। तकनीकी शब्दों का प्रयोग उसके मूल रूप में ही करना चाहिए, आदि-आदि (देखिए भाग 15.3.4)

7) घटना विशेष के संबंध में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करना, आंकड़ों और तथ्यों के नोट्स बनाना, मानसिक रूप से तैयार होना, आदि-आदि। (देखिए भाग 15.4)

8) क) उपलब्ध ध्वनियों का प्रयोग करके।
ख) 'मौन' की तकनीक का इस्तेमाल करके।
ग) खाली समय का सही उपयोग करके।

9. आवाज संवेदनशील और भावुकतापूर्ण होनी चाहिए। मृत व्यक्ति की उपलब्धियों और सेवाओं की जानकारी होनी चाहिए। आवाज उत्तेजक नहीं होनी चाहिए (देखिए 15.6.1)।

10. क) निष्पक्षता
ख) खेल की तकनीकी जानकारी
ग) आवाज में अनावश्यक उत्तेजना नहीं।
घ) बीच-बीच में स्कोर बताना।
ङ) एक कैमरे की तरह खेल के साथ-साथ चलना।

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. एडगर ई. विलिस, राइटिंग टेलीविजन एण्ड रेडियो प्रोग्राम्स, होल्ट, सिनेहार्ट एण्ड विंसटन कं. न्यूयार्क एन्ड्रयू क्रिसेल, अण्डर स्टैंडिंग रेडियो मिथ्यून ए. कंपनी, लंदन।
2. गंगाधर, मधुकर : भारतीय प्रसारण विविध आयाम
3. गुप्त, बृजमोहन : जनसंचार : विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. गुप्त, बृजमोहन : स्वाधीन भारत में मनोरंजन और कला, पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली।
5. चटर्जी, पी.सी. : ब्रॉडकास्टिंग इन इंडिया
6. चोपड़ा, लक्ष्मेंद्र : जनसंचार का समाजशास्त्र, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा।
7. जान फिस्के, अण्डरस्टैंडिंग रेडियो, मिथ्यून ए. कंपनी, लंदन रिचर्ड एल. राइटर दि फण्डामेन्टज्स ऑफ रेडियो एण्ड टेलीविजन मैकग्रा हिल बुक कंपनी, न्यूयार्क वाल्डों ऐबट और रिचर्ड एल. राइटर हैण्डबुक ऑफ ब्राडकास्टिंग।
8. जैन, एस.पी. : आर्ट ऑफ बॉडकास्टिंग
9. दुबे, श्यामचरण : संचार और विकास , प्रकाश विभाग, दिल्ली।
10. बरूआ, यू.एल. : दिस इज ऑल इंडिया रेडियो
11. लूथूरा, एच.आर. : इंडियन ब्रॉडकास्टिंग
12. विश्वकर्मा, रामबिहारी : आकाशवाणी
13. श्रीमाली, इंद्रप्रकाश : आकाशवाणी एवं प्रसारण विधाएँ, हिमांशु पब्लिकेशंस, उदयपुर।